

## आनंदपुर नगरी की स्थापना और पूर्व की यात्राएँ

डॉ. सुरजीत कौर जॉली

सभ्यता के विकास से लेकर शहरीकरण की प्रक्रिया चलती आ रही है। सिख गुरु इस मंत्र से भलीभांति परिचित थे। गुरु नानक साहिब से लेकर लगभग सभी गुरुओं ने नए शहरों को बसाया और शहरीकरण को विकास के साथ जोड़ा। कुछ इतिहासकार इसे गुरुओं की मनबूरी समझते थे, पर वास्तव में आर्थिक विकास व व्यापार वाणिज्य को बढ़ावा शहरों से ही मिलता है। यह बात सिक्ख गुरुओं की अर्थव्यवस्था में काफी सटीक बैठती है। अमृतसर का विकास इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। गुरु तेगबहादुर जी कीरतपुर के वारिस थे, पर वह एक नया शहर बसाना चाहते थे। एक ऐसा अलौकिक शहर जो थोड़ा अलग हो; जहाँ रिश्तेदारियों की जलन व तुष्या की अग्नि न पहुँच सके। शहर ऐसा जो रमणीक, सुंदर स्थान पर हो, जहाँ शांति, प्यार व सुख से रहा जा सके। पहाड़ व प्रकृति के सुंदर नजारों से भरा ऐसा स्थल, जो अगम, अडिग व अजीत भी हो।'

भाई संतोष सिंह जी के अनुसार

सुख से बास करहि निज पुर में।

मतसर ते न तपै को उर में।

माखोवाल ऐसे ही मनोहारी वातावरण से भरपूर था। धौलाधार की बर्फ से ढकी श्रृंखलाएँ, नैना देवी के पहाड़ व पास ही बहती सतलुज नदी एक असीम सुख और आनंद का वातावरण पैदा करते थे।

एक योजनाबद्ध शहर जहाँ मंडियों, व्यापारिक केंद्र, मोहल्ले, बाजार सभी व्यवस्थित सुंदर हो। इसके लिए उनके जेहन में एक तस्वीर थी। गुरुजी स्वयं ऐसे स्थान की खोज में आसपास की पहाड़ियों में विचरण करते थे।

इसी बीच बिलासपुर के राजा दीपचंद की मृत्यु हो गई। दीपचंद राजा ताराचंद का बेटा था, जो ग्वालियर के किले में कैद था। गुरु हरगोविंद जी ने जब वहाँ से 52 राजाओं को 52 कलियों वाला चोला पहनकर रिहा करवाया था, तो राजा ताराचंद भी उनमें से एक था। राज परिवार इसीलिए गुरु जी का एहसान मानता था, सम्मान करता था। रानी चंपावती ने राजा दीपचंद की अंतिम क्रिया में शामिल होने के लिए गुरु जी से विनती की थी। राजा दीपचंद की गुरु घर में अपार श्रद्धा थी। उनके प्यार को देखते हुए गुरुजी इसमें शामिल होते हैं। सभी रस्मों के बाद गुरुजी कहलूर का इलाका खरीदने की बात रानी के साथ करते हैं। रानी चंपावती कहलूर का गाँव गुरु जी को भेंट करना चाहती है। पर गुरु जी इस स्थान को पैसा देकर खरीदना चाहते हैं और इस बात पर सहमति बन जाती है। गुरुजी 500 रुपये राजमाता गुलाल देवी को देखकर माखावाल का हा अपने नाम करवा लेते हैं

जर खरीद कर पट्टे लिखाये।

ले सतगुरु निज निकट रखाए।

गुरबिलास पातशाही दसवीं के अनुसार :

आन बसाऊ चक तब अनंदपुर की जाये ।

जर खरीद जगा ले जागा।

नगर रचियो अच्छा सुखदराना।

माता जी के इसम निधाना।

मट्ट बही सिंधी मुल्तानी खाता जलहाना के अनुसार, "गुरु तेगबहादुर महला नौवाँ वासी कीरतपुर नाल सतैरे से बाईस असाव इक्कीस सोमवार के दिहु माखोवाल ग्राम के थेह तें बाबा गुरदित्त जो रंधावा बंस बाबा बुड्गा जी के दस्ते मुबारक से नौवें गराम की मोदी गड्डी, नाम चक्क नानकी रखा गुरु की कड़ाही दी। 19 जून, 1665 को गुरु जी ने इस स्थान की नीव बाबा बुड्गा जी के पोते बाबा गुरदित्त जी से रखवाई, और इसका नाम अपनी माता जी के नाम पर चक्क नानकी रखा। होशियारपुर जिले के गजेटियर के अनुसार (1883-84) शहर का नाम चक्क नानको है। नीव पत्थर रखने के स्थान का चुनाव भली-भांति निरीक्षक भाई दरगाह दास जी ने सुझाया था। जब बालक गोबिंद दास जी पटना से चक नानकी आए, तो आपने शहर की सुंदर छटा देखकर आनंद साहिब की पहली पाँच पोड़ियों पड़ी, "अनंद भया मेरी माए, सतगुरु में पाया।" गुरु तेगबहादुर जी इस शब्द से इतने अभिभूत हो गए, कि इसका नाम ही 'अनंदपुर साहब' रख दिया।

शहर के नक्शा नवीस गुरु जी स्वयं ही थे। शहर की योजना बनाते हुए यह विशेष ध्यान रखा गया कि शहर सुंदर और मुग्ध करने वाला हो, चित्रकार भी बुलाए गए ताकि घर, बाजार व इमारतें भन को मोहने व खींचने वाली हो। मुख्य रूप से माई झंडा जो जो बाचा बुट्टा जी के वंशज थे. उन्हें निगरानी उसारी का कार्य सौंपा गया। चार चौक अर्थात् सब दिशाओं में करती सड़कें, पक्की गलियों और पक्की सड़कें गुरुजी के नगर निर्माण ज्ञान को दर्शाती हैं। कई तरह के सुधड़ कारीगर एवं मजदूर इस काम में लगाए गए। संगतें भी श्रमरान करके अपना हिस्सा डाल रही थी।

शहर में सबसे पहले तीन मुख्य भवनों का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया, गुरु स्थान, एक पूजा व मंदिर का स्थल सराय तथा गुरु जो निवास स्थान, आवासीय भवन जो गुरु के महल कहलाये। गुरु दरबार के सभी प्रमुख कार्यकर्ता, महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों, अनुयायियों को घर बनाने के लिए जमीन प्रदान दी गई। व्यापारियों और दुकानदारों को जमीन बिना कोई कीमत लिए ही दी गई। वहाँ पर शहर योक्ता के अनुसार निर्माण कर सकते थे। किसानों को भी जमीन मुफ्त दी गई; पर उन्हें अपनी पैदावार से कुछ हिस्सा लंगर के लिए देना होता था। रोपड़ के एक सूफी संत अपनी यात्रा के दौरान आनंदपुर में रुके। जब उसने शहर के निर्माण को देखा तो वास्तुकार से पूछा कि इतनी विशाल योजना किस राजकुमार की है? उसको उत्तर

मिला कि इस पवित्र शहर का निर्माण हमारे पैगंबर गुरु तेगबहादुर द्वारा एक धार्मिक शहर के रूप में किया जा रहा है। पीर ने कहा जो धार्मिक पुरुष इतने भव्य शहर का निर्माण कर रहा है यह कैसा

महापुरुष जो स्वयं इतनी धन दौलत वह महलों के निर्माण में लगा है वह अपने अनुयायियों को किस तरफ ले जा रहा है? वह भवसागर से उन्हें कैसे पार उतारेगा? गुरु जी ने उन्हें दरबार में उपस्थित होने का निमंत्रण दिया। अपने नजदीक एक आसन पर बिठाया और पूछा कि वह किस सूफी धारा से जुड़े हैं? और कहाँ से आए हैं? पीर ने कहा वह रोपड़ के एक सूफी सैयद हैं और वहाँ उनकी अपनी खानगाह है। पीर जी ने कहा कि आप एक प्रसिद्ध धर्म व विश्वास के साथ जुड़े हैं, तो आपको यह भवन महल शहर बनाते देख कर यह लगता है कि आप यह भूल गए हैं कि संसार नश्वर है। इसलिए महल, सराय, रथ, घोड़े क्यों इकट्ठे करते हैं? गुरु जी ने कहा यह संसार नश्वर है यह मेरा पहला पाठ होता है। पर मनुष्यों के समाज में ही सच में प्रभु की दिव्यज्योत रोशनी चमकती है। उसे देखने व महसूस करने के लिए मानवता तथा दान पुण्य का महत्व समझने के लिए समाज में रहना जरूरी है। एक गृहस्थ का जीवन जीना आवश्यक है। यह भवन महल सराय कुछ भी मेरे लिए नहीं है। इनका निर्माण संतों व श्रेष्ठ पुरुषों के लिए किया गया है। आने वाली शताब्दियों तक प्रभु का यह मंदिर ईश्वर को प्यार करने वालों का घर होगा। यह शांति व खुशी का घर होगा। यह सुनकर पीर जी के आँसू बहने लगे और उन्होंने सारे शहर को आशीर्वाद दिया।

संगतों ने विनती की कि उनके निवास के लिए भी योजना बनाई जाए, मोहल्ले व घर बनने शुरू हो गए। कुछ लोगों ने स्वयं घर बनवा लिए। माझा मालवा से कई परिवार आ गए। जो स्वयं नहीं बनवा सकते थे उन्हें आर्थिक दी गई व घर भी बनवा कर दिए गए। इस समय कुछ व्यापारी भी गुरुजी के पास आए, ताकि मंडियों के लिए स्थान सुरक्षित किया जाए। इस क्षेत्र में कोई भी बड़ी मंडी नहीं थी, व्यापार के लिए बाजार बनवाए गए। कुछ व्यापारियों को आर्थिक सहायता के द्वारा व्यापार के लिए पूंजी दी गई।

अनंदपुर में संगतों की आमद बढ़ गई। गुरुघर की भैंटा (चढ़ावा) में भी काफी इजाफा हुआ। लंगर तो लगातार चल ही रहे थे। बड़ी हुई भैंटा (चढ़ाया) बचाने के लिए नहीं थी, उसे समाज सुधार के कार्यों में खर्च किया जाने लगा। इससे कुएँ खुदवाय जाते, नगर के निर्माण व रखरखाव के लिए या बेघरों को घर बनवा कर देने में खर्च होत थे।

कूप लगायो सदन बनायो।

खराचहु पुर के हेत बसावहु।

नगर व नगर वासियों के विकास की बात ही प्रमुख थी।

'सूरज प्रकाश' के अनुसार गुरु जी ने अनंदपुर के निर्माण व

जन्य कार्यों को बेहतर व सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने

प्रतिनिधियों भाई भागू जी. रामू जी, भाई साधु मुल्तानी, भाई बहलोके तथा देस राज जी को यह कार्य सौंपकर हिदायत दी, जो भी मेरा सिख आए उसे नगर निर्माण व जनहित के कार्यों के लिए खर्चा करना है। यह ध्यान विशेष तौर पर रखना है कि नगर वासियों को ना तो कोई सताए, और ना ही कोई दुखी करें। अगर कोई ऐसा करता है तो उसको रोकना उचित होगा, आवश्यक हो तो सजा भी दी जाए।

पुर को खेद देहिं न कोई.

जे को देहिं, रह न कोई थी।

यह एक ऐसे राज्य की परिकल्पना थी, जैसी रविदास जी ने की कालांतर में अनंदपुर, आनंदपुर साहिब हो गया, यह खालसा की जन्मस्थली बन गया। 1699 की बैसाखी पर खालसा का सूजन यही हुआ और इसका नाम तख्त श्री केशगढ़ साहिब रखा गया। आधुनिक समय में यहाँ भारत सरकार व अन्य संस्थाओं ने यह 'विरासत-ए-खालसा का निर्माण किया। यहीं से कुछ किलोमीटर की दूरी पर शिवालिक पहाड़ियों की गोद में लगभग 163 एकड़ भूमि में दशमेश अकैडमी की स्थापना की गई।

जब शहर अपनी पूरी रौनक व रवानगी पर पहुँच गया, तो गुरु जी ने पूर्व की तरफ यात्रा का मन बना लिया।

गुरु नानक साहिब ने पूर्वी भारत के दूरस्थ स्थानों तक यात्रा की और वहाँ पर नाम का प्रचार प्रसार किया। आप ने संस्कारों के निर्माण तथा उच्च गुणों के धारणी मानव की संरचना का बीड़ा उठाया था। देश प्रेम उनके अंदर हिलोरे ले रहा था. इसलिए आवश्यक था कि ऐसी भावनाओं को जन जन तक पहुँचाया जाये। इसके इसलिए आप जहाँ भी गए आपने संगते भी कायम की। अर्थात् समय पाकर नानक नाम लेवा या उस नई सुधार लहर के कई उपासक हो गए, जो व्यर्थ के वहमों, भ्रमों से दूर सादा व समानता का जीवन जीना चाहते थे। जहाँ छुआछूत, जाति प्रथा के बंधन. उच्च नीच का भेदभाव इतना अधिक ना हो कि मानवता उसमें कहीं खो जाए। गुरु नानक साहिब के यह उपासक अपने अपने क्षेत्र में मिल बैठकर सुबह शाम भजन कीर्तन करते थे। मेहनत व ईमानदारी की कमाई को भी साथ बैठ कर खाते थे। गुरु नानक जी द्वारा लगाए गए यह पौधे सूखे नहीं थे, उन्हीं को और सौंचने के लिए व हरा-भरा करने की गुरु तेगबहादुर जी पूर्व की यात्रा पर अवश्य ही जाना चाहते थे।

गुरु नानकदेव जी द्वारा स्थापित संगतों का मुखिया उन्हें गुरु उपदेशों के साथ जोड़े रखता था तथा इस तरह से वह गुरु घर से भी जुड़े रहे। कालांतर में यह मसंद कहलाए। दूरस्थ प्रदेश होने के कारण गुरु नानक जी के बाद उन संगठनों तक सिख गुरु नहीं पहुँच पाए। परंपरा के अनुसार मसंदों ने संगतों के साथ गुरु साहिबानों से संबंध बनाए रखें। गुरु तेगबहादुर जी अब उन संगतों तक पहुंचना चाहते थे, संगतों की तरफ से भी यह मांग और बेनती लगातार आ रही थी. "यह लोग दूर देश के कारण पंजाब नहीं आ सकते दर्शन की अभिलाषा लिए बैठे हैं. कोई सुंदर पतंग बनाकर मड़मली तकिए सजाकर यह प्रतिज्ञा करके बैठा है कि जब तक उस पर विराजे हुए गुरु का दर्शन नहीं करेंगे; तब तक हमने चारपाई पर भी नहीं सोना। कईयों ने सुंदर मंदिर (घर) बना कर बैठे हैं, जब तक गुरु चरण नहीं पड़ेंगे, वह उस में विराजेगें

नहीं। किसी ने सुंदर पोशाके बनाई, किसी ने घोड़ा पाला, किसी ने सुंदर पालकी बनाई. उनकी श्रद्धा व विश्वास की लाज रखनी भी जरूरी थी।

दूरस्थ प्रदेशों की यात्रा के लिए यह आवश्यक था कि उसकी पूरी योजना बनाई जाए व कई तरह के कार्य भिन्न-भिन्न जनों का को सौंप दिए जाएँ। अग्रिम दल के रूप में भाई संगतिया, भाई सुखानंद और नत्थू को यह जिम्मेदारी सौंपी गई कि गुरु जी व उनके परिवार के पहुँचने से पहले अगले पड़ाव तक तंबू कनाते व लंगर का अन्य आवश्यक सामान लेकर पहुँचा जाए। इस यात्रा में गुरु जी घोड़े पर, माता नानकी जी रथ पर, व माता गुजरी जी पालकी पर सवार थी। मुख्य दीवान भाई मती दास जी को यात्रा का मुखिया बनाया गया। भाई दयाला जी को गुरु के महल अर्थात् माताजी, पत्नी व अन्य स्त्रियों की देखभाल का कार्य सौंपा गया।

फारसी के प्रसिद्ध विद्वान भाई सती दास जी को गुरु द्वारा उपचारित बाणी को फारसी में अनुवाद करने का कार्य सौंपा गया, जिससे सभी मुसलमानों को भी समझने में मुश्किल ना हो. भाई सती दास इस तरह से बाणी को सहेज लेते थे केसर सिंह वंशावली नामा में लिखते हैं-

बाणी जो साहिब करन उच्चार।

सो सतीदास नित करे फारसी अखरां में उच्चार।

प्रचार प्रसार दौरे में फंड या धन की भूमिका भी अहम रहती है। डॉ तरलोचन के अनुसार इस यात्रा का समस्त खर्चा प्रयाग, बनारस, पटना, व ढाका की संगत ने उठाया था। ढाका सबसे समृद्ध केंद्र था अतः उसका योगदान भी सबसे अधिक रहा होगा।

कीरतपुर से चलकर पहला पड़ाव भरत गढ़ गाँव में किया गया। यहाँ पर बारिश के पानी ने लोगों के घरों व फसलों को तबाह कर दिया था, व पीने के साफ पानी की भारी कमी थी। गुरुजी ने मामा कृपाल चंद अपने खजांची को यह हुक्म दिया उस गाँव की धन से सहायता की जाए, लंगर लगाए जाएँ, व उनके लिए दवा का प्रबंध किया जाए।

यहाँ से रोपड़ व कुराली होते हुए गुरुजी का कारवां बहादुरगढ़ या सैफाबाद पहुँच गया। जहाँ नवाब सैफुद्दीन की रिहाइश थी। प्रोफेसर प्यारा सिंह पदम के अनुसार सैफुद्दीन शाहजहाँ के वजीर आसिफ खान का बेटा था, व बेगम नूरजहाँ का भतीजा था। 7 समकालीन इतिहासकारों के अनुसार वह शाही खानदान का खास रिश्तेदार था। सैफुद्दीन गुजरात, दक्षिण ढाका व कश्मीर में उच्च पदों पर आसीन था।

प्रिंसिपल सेवा सिंह के अनुसार, 'वह 1648 में बिहार व 1656 में गुजरात का हाकिम नियत हुआ। 1659 में उसे दक्षिण गवर्नर बनाया गया। 1664 में ढाका का सूबेदार बन गया। 1666 से 1671 तक इसको कश्मीर का गवर्नर बनाया गया और उसे यह हुक्म दिया गया कि वह हिंदुओं को सरकारी नौकरियों से निकाल दे। पर उसने किसी भी हिंदू को बर्खास्त नहीं किया वह औरंगजेब की जबरन तबलीग वाली नीति

से सहमत नहीं था। इसलिए सब कुछ छोड़ कर घर आ गया। औरंगजेब ने निर्दयी इफ्तार खान को कश्मीर का गवर्नर बना दिया, ताकि वह सख्ती से हिंदुओं को मुसलमान बना सकें।" \* सैफुद्दीन उदार व सूफियाना विचारों वाला था, उसे 'फकीर उल्लाह' भी कहते हैं। मूसा रोपड़ी नाम के सूफी पीर ने गुरुजी के बारे में सैफुद्दीन को बताया था। वह गुरु जी के व्यक्तित्व से इतना अधिक प्रभावित था, कि जब उसे गुरु जी के उधर आने की सूचना मिली तो वह स्वयं उनकी अगवानी के लिए गया। शाहीबाग में गुरुजी के कारवां को ठहराया। उसने स्वयं गुरुजी के घोड़े को की लगाम पकड़ कर उनको अपने महलों में ले गया। माता नानकी जी पालकी में ही अंदर पधारी। उसकी बेगम ने माताजी को मत्था टेका व कई बहुमूल्य तोहफे भेंट किए। लंगर के लिए बर्तन तंबू, झोलदारियाँ व ऊँट इत्यादि भी भेंट किए। गुरु जी की सवारी के लिए बढ़िया घोड़ा श्रीधर भी सम्मान से भेंट किया। 9 सैफुद्दीन के साथ गुरु जी का प्यार बना रहा और गुरुजी भी उसको कीमती वस्तुएँ भेंट के रूप में भेजते रहे। एक हुकमनामें में आप मुंगेर की संगत को यह आदेश देते हैं, कि " पाँच खासे बासण (बर्तन) मीनापुर कियाके, सुराही प्याले हच्छे अच्छे कहारां नू देणे हन। हच्छे बासण भेजने।" शिष्टाचार व सभ्याचार में परिपक्व गुरु जी के व्यक्तित्व का सुंदर उदाहरण है। गुरु जी गाँव गाँव एक नई अलख जगा रहे थे। एक नया नैरेटिव (वृत्तांत) लिख रहे थे। कुआँ प्यासों के पास जा रहा था और सदियों पुरानी भारतीय परंपराओं, सोच व दर्शन को स्थापित कर रहे थे। धर्म व अध्यात्म क्या कर सकता है; यह भी तो भूले भटके लोगों को बताना आवश्यक था। गंडू गाँव में आपने भाई मुगलु के घर में रहना तय किया। इसकी मांग साँस निकलने से पहले गुरु दर्शनों की थी।

अली शेर गाँव बेटियों के व्यापार के लिए काफी बदनाम था। लोगों को बेटियों के व्यापारियों के रूप में देखा जाता था, जो धन लेकर बेटि बेच देते थे। आप ने गाँव वालों को बेटियों को बेचने के स्थान पर ब्याहने की बात की; स्वयं उस में योगदान दिया। समाज की इस बुराई के विरुद्ध आवाज उठाना स्वयं एक क्रांतिकारी कदम था।

समरावां में भीखी स्थान का चौधरी देसू अपना हिंदू धर्म छोड़कर सखी सरवर सुल्तानियों के पीछे चलने लगा था, जब वह गुरुजी को मिलने आया तो आपने कहा देस राज तुम तो हिंदू चौधरी हो, धर्म का रक्षक होकर, फिर हिंदू धर्म का ही घातक बन गया है। यह क्या बुद्धिमानी है? बाड़ तो खेत की रक्षा के लिए होती है, खाने के लिए नहीं। तुम तुरक की जूठन खाते हो और मानसिक अधीनगी भी कर ली है, इस जाल से बाहर आओ।" गुरु जी की ललकार व सलाह पर पूरा गाँव अपने धर्म में लौटा आया। नए मापनड स्थापित हो रहे थे। नई बहादुरी ललकार की इबारत गुरु जी समस्त समाज के सामने लिख रहे थे।

कैथल एक ऐतिहासिक नगर हैं, जो प्राचीन काल से 'कार्य स्थल' के रूप में प्रसिद्ध भाई सिंह ने 1667 में इसे अपनी राजधानी बनेगा प्रचलित महा गाई उदयसिंह जी की सरपरस्ती के अंतर्गत भाई संतोष सिंह ने गुरु प्रताप सूरज ग्रन्थ व अन्य ऐतिहासिक रचनाओं की रचना कैथल में ही की हुई है। इस महत्वपूर्ण स्थल पर जब गुरु जी पहुँचे, तो यह जानना चाहा कि क्या वहाँ पर सिखों का कोई घर है?

कैथल पुर को हमने जाना। को सिख है कि नहीं तिस थान।"

तब एक बढई सिख ने कहा कि यहाँ पर सिखों के तीन घर हैं-दो बनिए और एक बढई का. गुरुजी की इच्छानुसार वह बढई के घर चले गए. वह बहुत खुश हुआ और खूब सेवा की।

जथा सकत सिख सेवा करी।

गुर परसन्न हुए अपनी हरी।

पिहोवा से होते हुए बारना में यह संदेश दिया कि तंबाकू का सेवन नहीं करना चाहिए। यह बहुत ही गंदा नशा है; जो तन व मन को भ्रष्ट कर देता है और इससे घर में कंगाली आ जाती है.

भाई संतोख सिंह के अनुसार-

गंदा घूम बंस ते तिआगाहु।

अति गिलान इस ते घर भागो।

सिख सन्तान सेवा में लागहु।

अजहु वंड कर कृत अनुरागो।

लहल गाँव जहाँ आज दुःख-निवारण साहिब सुशोभित है. गुरु जी के आगमन से पवित्र हो गया। यहाँ एक माता करमो दई चेचक रोग से पीड़ित थी। पवित्र सरोवर में स्नान और गुरु जी की चरण धूल से वह निरोग हो गई। जब गुरु जी किसी भी स्थान पर टिकते या पहुँचते थे तो आस-पास की सांगत भी दर्शन व बखशीश लेने के लिए पहुँच जाती थी। आप टहलपुर, आकड़, लमां, सीमड. रोहटा, जंड मघोली. इत्यादि स्थानों पर गुरु कृपा हुई।

मलोवाल में गाँव के सरपंच ने गाँव निवासियों के साथ प्यार से सेवा की। गाँव के कुओं का पानी पीने लायक नहीं था, पानी दूर से लाना पड़ता था। जब गुरु जी को यह खबर हुई तो उन की दया दृष्टि से पानी मीठा हो गया। यह करिश्मा वास्तव में कई स्थानों पर हुआ। यहीं पर गोदा को भाई कहकर सम्मानित किया गया जो बाद में उनका अनन्य सिख बन गया।

गाँव सोखा में चौधरी मलूका को अहंकार न करने का पाठ पढ़ाया और गाँव वालों में सेवा भाव को भी जागृत किया। फरवाही गाँव जो ताप रोग से ग्रसित था, उन को चमारों की छापड़ी में स्नान करने को कहा, गाँव रोग से मुक्त हो गया। ऊँची-नीची जाति का अभिमान व समाज में पड़ी खाईयों को इस तरह से दूर करने के प्रयास व क्रांति गुरु जी कर रहे थे।

चेचक से ग्रसित गाँव को एक छोटे से तालाब में स्नान के लिए हुक्म दिया, वहाँ सब निरोग हो गए यहीं पर गुरुद्वारा दुःख निवारण साहिब बन गया जो आज तक रोगों को काटा जा रहा है। कुछ और स्थानों पर होते हुए जब गुरुजी धमतान पहुँचे तो आपको औरंगजेब के आदेशानुसार दिल्ली बुलाया गया आरोप

यह था कि गुरु जी हिंदुओं व मुसलमानों में एक नए धर्म का प्रचार कर रहे हैं। साखी नौवें महल की लिखती है:

सुन महिमा आलमगीर रिसाये।

श्री सतगुरु जी कह पठवाये।

तुम हिन्द को गुरु कहावो।

कछु हम को करामत दिखलावो।

सेवा सिंह के अनुसार आलम खान रोहिल्ला एक सैनिक टुकड़ी के साथ आदेश लेकर आया था। सरदार ने घोड़े से उतर कर कहा कि पीर जी तुम्हें देहली में बादशाह ने बुलाया है, तैयारी करिये" गुरुजी को गिरफ्तार नहीं किया गया। वह अपने घोड़े पर ही सवार थे। वह मार्ग में प्रचार करते रहे। हरियाणा के खटकड़ गाँव में पानी खारा था, गुरु जी ने अपनी मेहर की दृष्टि से वहाँ का पानी मीठा कर दिया और नए कुए को खोजने में सहायता भी की।

भट्ट बहियों के अनुसार बादशाह ने गुरुजी का कत्ल करने का हुकम दिया। कवर राम सिंह को कत्ल करने का हुकम दिया गया। कंवर रामसिंह कछवाहा ने ऐसा करने से औरंगजेब को रोक दिया। गुरुजी के महत्वपूर्ण सिख रसीना नगरी में रानी पुष्पा देवी को मिलने गए कि कुछ बीच-बचाव किया जाए। राजा राम सिंह ने बादशाह को वस्तुस्थिति से परिचित करवाया, कि गुरुजी निर्दोष हैं; किसी को भड़काना उनका कोई मकसद नहीं है। महिमा प्रकाश के अनुसार औरंगजेब के साथ गुरु जी की मुलाकात मुगल दरबार में हुई। आप को चंदन की ऊँची चौकी पर आदर सहित बैठाया गया व कोई चमत्कार दिखाने को कहा गया। आपने एक ही बात कही-

'न लायक फकर को करामात करना है निस दिन सदा खौफ मौला के रहना करै जो करामत मुशरक कहावै जो मुशरक कहिया लाशरिके न भावै। "14

गुरु जी ने औरंगजेब को समझाया कि आपको बादशाही रब ने दी है, इसीलिए अपनी समस्त प्रजा को एक नजर से देखो क्योंकि ईश्वर को जुल्म व जबरदस्ती अच्छी नहीं लगती है। जुलम जलामी रब न भावै।

जब औरंगजेब ने गुरु गद्दी के झगड़े के बारे में बात की तो गुरुजी ने कहा हमारा न तो कोई दावा है और ना ही कोई झगड़ा है।

हम दावा काहूँ सो नाही।

नहीं लेन देन काहूँ सो आही।"

गुरुजी अजातशत्रु थे, उनकी सेवाएँ बिना किसी भेदभाव के सबके लिए थी। सतबीर सिंह के अनुसार औरंगजेब को भी यह कहना पड़ा :

रहे रजाए में अलह फकीर।

सो मोला के है जग धीर।

गुरु नानकदेव जी के समय जो संगतें भारत के पूर्व की तरफ स्थापित की गईं, उन की निशानियाँ आज भी मौजूद हैं। चाहे अन्य गुरु इन क्षेत्रों में फेरी नहीं लगा पाए, पर गुरुओं के प्रतिनिधियों मसंदों के मध्यम से जुड़ाव बना रहा। मसंदों, संगतों, सेवकों, भक्तों की श्रद्धा और प्यार को देखते हुए गुरु तेगबहादुर जी ने पूर्व की यात्रा की थी। सासाराम के चाचा फगु शाह, ढाका के भाई बुलाकीदास, बनारस के भाई जवेरी जी और पटना के भाई दयाल दास जी दिवाली के सालाना समागम में शामिल होने; दसबंध की भेंटा देने तथा गुरु दर्शनों के लिए बकाला पहुँचे। उन्होंने विनती की कि गुरु नानक जी अपनी यात्राओं के समय पूर्व में सिख संगठन कायम कर गए थे अब आपके दर्शनों की चाहत है। भाई संतोष सिंह लिखते हैं:

कब राकापति बदन दिखावै।

ब्रिन्द चकोर सिख हरखावै।

ढाका, बनारस, पटना, मुंगेर व जौनपुर इत्यादि की संगत ने समस्त यात्रा का खर्च उठाने का भी निश्चित किया। गुरुजी व कुछ अन्य सिख घोड़ों पर सवार थे। माता नानकी व गुजरी जी रथ पर सवार थे। दिल्ली से चलकर पहला पड़ाव मथुरा में कंस टीला के पास किया। श्री कृष्ण महाराज की जन्मस्थली मथुरा, वृंदावन महत्वपूर्ण पड़ाव थे इस समय आप ने गोकुल की भी यात्रा की।

आगरा में एक वृद्ध माई भागो गुरु जी के आने की आस लगाकर बैठी थी उसने अपने हाथ से कात कर वस्त्र तैयार किया था, जिसे गुरुजी को भेंट करना चाहती थी। ईश्वरीय आत्मार्ये तो प्यार से ही पाई जा सकती हैं। गुरु जी ने माई भागो की तड़प का एहसास किया और स्वयं उसके पास पहुँचकर भेंटा स्वीकार की। उस स्थान का नाम ही 'माई-थान' अर्थात् माई का स्थान हो गया। आगरा से इटावा होते हुए कानपुर पहुँचे। रवायत व लोक श्रुति के अनुसार इटावा में आप एक उदासीन आश्रम पूर्वी टोला में ठहरे जिसकी सेवा उदासीन संप्रदाय के पास है। कानपुर से यह काफिला प्रयाग राज पहुँच गया। अहीया पुर मोहल्ले में पड़ाव किया गया। अब यहाँ गुरुद्वारा पक्की संगत एक बहुमूल्य यादगार के रूप में खड़ा है। प्रयाग में गुरुजी लगभग 4 महीने तक रहे। लोगों को भ्रम और कुरीतियों के विरुद्ध उपदेश देते हुए गुरुजी ने दान पुण्य भी बहुत किया। गुरु गोबिंद सिंह जी ने विचित्र नाटक में अपनी आत्मकथा में लिखते हैं:

जब ही जात त्रिवेनी भये।

पुन दान दिन करत बितेये।

गुरुजी ने यात्रियों, संतों व फकीरों के लिए लंगर खोल दिए व जरूरतमंदों को वस्त्र इत्यादि भी दान किए गए। विचित्र नाटक यह

रिकॉर्ड करता है :

तात मात मुर अलख अराधा।

बहु बिध जोग साधना साधा।

तिन जो करी अलख की सेवा।

ता ते भये प्रसन्न गुरदेवा।

गुरु गोबिंद सिंह दुनिया में आने का प्रयोजन बताते हुए लिखते हैं कि उनके माता-पिता इतनी कठोर साधना कर रहे थे, निसंदेह समय की मांग को देखते हुए एक बलवान, बली योद्धा पुत्र की कामना थी; जो भारतवर्ष का उद्धार व दुष्टों का संहार कर सके. दूसरी तरफ ईश्वर भी अपने प्राणियों पर और अत्याचार सहन नहीं कर सकता था। गुरु गोबिंद सिंह जी लिखते हैं:

तिन प्रभ जब आयास मोहे दिया।

तब हम जनम कलू में लिया।

तेहि प्रकाश हमारा भयो।

पटना शहर विखे भव लयो।

माता नाम की भी पोते को गोद खिलाने की प्रबल आस्था रखती थी:

सुत के सुत को लेकर गोद।

करो दुलारन पाए प्रमोद।"

भाई काहन सिंह नाभा के अनुसार दशमेश माता के गर्भ में यही पर विराजे थे। पटना के स्थान पर आपका जन्म हुआ।

प्रयागराज में गुरु जी का कारवां मिर्जापुर पहुँचा, जहाँ गुरुद्वारा गुरु की संगत है। मिर्जापुर की संगत के प्रति गुरु जी का विशेष स्नेह व मान पता चलता है। भाई बालचंद, भाई हरि कृष्ण, भाई चतुर्भुज, भाई लालू आदि यहाँ के सिख, इतिहास प्रसिद्ध हैं। मिर्जापुर की संगत के नाम गुरुजी का हुकमनामा उपलब्ध है जो बताता है कि संगत का दसबंध या कार भेंटा गुरुजी तक पहुँची और उनके आशीर्वाद भी प्राप्त हुए।

सफेद घोड़े श्रीधर पर सवार होकर ठेठ राजसी वेशभूषा में गुरु जी काशी, बनारस पहुँच गए। कीमती कहीं खाब का यह चोला अंग (अंग-वस्त्र) भूरे रंग का है व गुरुद्वारा बड़ी संगत में सहेज कर रखा गया है। 18 इस क्षेत्र के प्रसिद्ध सिख भाई जवेहरी मल, भाई राम राय, भाई कृपाल दास, भाई शिबू सेठ, दलपत और भाई भिखारी दास आपकी सेवा में हाजिर रहे। बनारस रेशम के काम के लिए प्रसिद्ध है। आपको रेशम के कटरे में ले जाया गया। संगतों का प्यार, श्रद्धा व उल्लास को देखकर गुरुजी ने कहा:

होए प्रसन्न सतगुरु कहियो। यह कोठा सिखी को आहि।

(महिमा प्रकाश)

गुरु जी के दर्शन के लिए जोगी, संन्यासी, सिख, भक्त कबीर व रविदास जी के अनुयायी उमड़ पड़े। यहीं पर आप ने गंगाजल को प्रकट किया, जिस की निर्मल धारा आज भी केवल डेढ़ दो फुट की गहराई पर गुरुद्वारे के अंदर ही बह रही है।"

ज्ञान गोष्ठी विचार-विमर्श चलता रहता था। गुरुजी विशेष तौर पर यह कहते थे, कि धर्म में कथनी व करनी में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। जो धार्मिक पोथियों व ग्रंथों में लिखा है, उस पर चलना व उसे जीवन में उतारना ही प्रधान व प्रमुख है। बनारस में गुरु जी का प्यारा घोड़ा श्रीधर बीमार हो गया। आपने वहाँ के मसंद भाई जवेहरी मल जी को उसकी देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी और एक हुकमनामा जारी किया।

"गुरसत भाई जवेहरी सरबत संगत गुरु रखेगा। श्रीधर की संगत सेवा करनी। अलूफा श्रीधर नूं देना। श्रीधर जित वेला चंगा होवेगा, तां पटने पहुँचाए देणा, संगत का भला होगा"। (यह हुकमनामा गुरुद्वारा बड़ी संगत बनारस में रखा है।)

जौनपुर की संगत भाई गुरबखश जी के नेतृत्व में गुरु जी के दर्शनों को आई। भाई गुरबखश जी पर कीर्तन की मेहर थी। आप संगत को निहाल करते रहते थे। एक दिन गुरुजी उस कीर्तनीए से इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने एक मृदंग भाई गुरबखश जी को दे दी। जिससे जौनपुर की संगत का नाम ही 'मृदंग वाली संगत' पड़ गया।

ससराम ने एक अनन्य प्यारे गुरु सिख व समस्त संगत को मिलने गुरुजी पहुँचे। वहाँ के मसंद का नाम फग्गू शाह था जिसे प्यार से लोग चाचा फग्गू भी कहते थे। उसने अपने घर के द्वार बहुत ऊँचे बनवाए थे, ताकि गुरु जी घोड़े पर सवार होकर वहाँ प्रवेश करें, लोग इस बात के लिए उसकी हंसी भी उड़ाते होंगे। पर भक्त का प्यार गुरु जी को वहाँ ले गया। फग्गू शाह ने दसबंध व कार भेंटा गुरु जी को जब अर्पण की; तो गुरुजी ने पूछा, "कुछ रह तो नहीं गया? या कुछ याद ना आ रहा हो" तो महिमा प्रकाश के अनुसार फग्गू ने कहा.

"जो कार गुरु जी जुरे फग्गू गृह रखें, बनाए हुण्डी कराए हुजूर सो देता सदा पठागे"।

जब फग्गू उदास होकर बैठ गया तो, गुरुजी ने कहा तुम्हारे आंगन में जो बेरी का पेड़ है उसका हिसाब नहीं दिया। तब फग्गू को याद आया कि जब वह एक सिख के घर कार भेंटा इकट्ठा करने गया था तो उसकी पत्नी ने कहा कि, 'वह घर पर नहीं हैं और कुछ देने को भी नहीं है'। तो उस ने कहा, 'जो घर पर है वही दे दो' तब उस स्त्री ने कहा, 'मेरे घर में तो केवल कूड़ा है. ले जाओ.' फग्गू धन्यवाद करता हुआ कूड़ा ही उठा लाया था। घर लाकर जब कूड़े को छाना तो उसमें से बेर की गुठली निकली. उसे आंगन में दबा

दिया। समय पाकर वह एक बड़ा फलदार वृक्ष बन गया। धर्म जो निस्वार्थ भाव से चलते हैं, उनमें नम्रता का गुण भी उतना ही आवश्यक है। गुरुजी के अनुसार असली सिख का स्वरूप यही है। इसी के अवगुण न निकाल कर, कर्तव्य पथ पर बिना किसी दम्भ व अहंकार के आगे बढ़ते रहना। इससे यह भी पता चलता है कि गुरु भैंटा या दसबंध का क्या अर्थ है। समाज कल्याण हेतु बड़े धार्मिक स्थानों पर लंगर, अस्पताल, वृद्धाश्रम या शिक्षण संस्थाओं को चलाने के लिए आर्थिक संस्थानों की आवश्यकता होती है जो सबकी पवित्र कमाई से ही संपन्न होता है।

गया से होते हुए, गुरुजी पटना पहुँचे। बिहार का प्राचीन शहर जहाँ बुद्ध धर्म भी विकसित हुआ था। एक बहुत ही ऐतिहासिक स्थान है। गुरु जी ने यहाँ पर एक श्रद्धालु चेताराम की हवेली में डेरा डाला, पर यह स्थान छोटा था और गुरु जी का आगमन सुनकर बड़ी संख्या में सिख उनके दर्शनों के लिए कई तरह की भेंट एवं उपहार लेकर पहुँचने लगे। गुरु नानक जी ने जो संगत यहाँ स्थापित की थी. वह काफी बड़ी हो गई थी। भाई जय गोपाल अग्रवाल ने गंगा किनारे अपनी बड़ी हवेली गुरुजी को अर्पण कर दी। यहाँ आज एक विशाल गुरुद्वारा है।

गुरु जी के आगमन व प्रवचनों का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि हाकिम नवाब रहीम बकश व अन्य नवाब भी गुरुजी के नतमस्तक हो गए। सासाराम के नवाब ने 52 बीघे खाम जरीब पट्टा गुरुजी के नाम किया, जिसकी आमदनी से संगत व धर्मसाल की देखभाल होती रहे। एक फरमान के द्वारा पटना की महसूल चुंगी इकट्ठी करने की आज्ञा सिखों को दी गई। जिस बैलगाड़ी में अन्न, घी व मसाला लदा होता था. उस पर महसूल की दर दो दमड़ी की दर से, अन्य सामानों जैसे कि कपड़ा इत्यादि पर एक दमड़ी की दर से वसूली के आदेश प्राप्त हुए। गाँव चूरिया का समस्त इलाका गुरु तेगबहादुर जी के नाम किया गया। जिससे धर्मसाल में ठहरे फकीर यह साधुओं के लिए राशन पानी की कमी ना हो और धर्म व दान के कार्य भी चलते रहे। गुरुजी के नाम कुछ लोगों ने अपने जाग भी कर दिए।"

कुछ इतिहासकारों में कवल फारसी के एक स्रोत का हवाला देते हुए गुरुजी को डाकू में लुटेरा कहा है। सियासल मुतखरिन का लेखक सैयद गुलाम हुसैन गुरु जी की शहीदों के लगभग 100 साल पश्चात गुरुजी पर लूट खसोट का आरोप लगाता है; जो बिल्कुल आधारहीन था उसी का समकालीन जार्ज फोरस्टर गुलाम हुसैन को कोलकाता में मिलता है लेकिन अपने पंजाब भ्रमण के समय उसे कोई भी ऐसा दस्तावेज नहीं मिलता जिसमें किसी संगीन अपराध का वर्णन हो, जिसके लिए गुरुजी को इतनी बड़ी सजा दी गई। 22 लोग तो अपने प्यार व श्रद्धा से गुरु जी को वोट देते थे क्योंकि उसका खर्च समाज की भलाई में होता था।

एन.सी.ई.आर.टी की किताबों में लगभग 20 वर्ष तक गलत पढ़ाया जाता रहा, किसी भी संस्था ने न तो इसका विरोध किया और ना ही इसे ठीक करने के लिए कोई मुहिम चलाई। गोबिंद सदन के संस्थापक बाबा विरसा सिंह व शिक्षा मंत्री मुरली मनोहर जोशी तथा जे.एस. राजपूत डायरेक्टर एन.सी.ई.आर.टी. के

अथक प्रयासों से यह मामला सर्वोच्च न्यायालय में पहुँचा। सर्वोच्च न्यायालय ने धर्म व उनके महापुरुषों को समान आदर देते हुए, सम्मान सहित यह आदेश जारी किया-

"The object for value based education is to have a national fight against all kind of fanaticism, ill will, violence, dishonesty, corruption, exploitation and drug abuses... what is required today is not religious education but education about all religion, their the value inherent in and also a comparative study of the philosophy of all religions. Students have to be given the awareness that the essence of every religion is common, only the practice differ...even if there are differences of in certain areas, people have to learn to co-exist and carry no harted against and religion, one should never forget that all the values are derived from the ultimate reality as Supreme power self-consciousness to which man orients himself. To believe that we have the divine spark in each of us is the most important eternal value inculcated by the small children even before starting their school life."

अक्टूबर 2002 में गोबिंद सदन में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की गई। जिसमें बाबा विरसा सिंह जी ने कहा, "ईश्वरीय संदेश वाहक के बारे में इस तरह के जहरीले और झूठे आरोप हमारे देश के लिए अच्छे नहीं हैं। इस तरह अवतारों पर आक्रमण करने से कुछ भी अच्छा नहीं होगा, उनकी आलोचना न करो, हम इसे बर्दाश्त नहीं करेंगे।" इस तरह गुरु तेगबहादुर जी के बारे लंबे समय से विकृत इतिहास को शोधित किया गया।

गुरु जी लूटमार कर लंगर पानी या विकास के कार्य नहीं चला रहे थे। उनकी मान्यता व प्रभाव इतना पुरजोर था कि संगत और उनके अनुयायी, गुरु-घर व समाज कल्याण के कार्यों में डालने के लिए तत्पर रहते थे, यह गुरु सेवा थी, जिसे दसबंध भी कहा जाता है।

गुरुजी के जो हुकुमनामें पटना से भेजे गए, वह इस बात के साक्षी हैं कि गुरु जी तपी और त्यागी होने के बावजूद अपनी जिम्मेदारियों से अनभिज्ञ नहीं थे। परिवार के प्रति क्या जिम्मेदारी होती है इसको भी खूब समझते थे, गोबिंद दास (गुरु गोविंद सिंह) जी के जन्म के समय जो पाई थी उसको मेवे पेड़ी बाई कहकर संबोधित किया गया है। वेवे शब्द पंजाब में आदर सूचक शब्द है। बेथे पेड़ी बाई का परिवार भी गुरु घर के प्रति समर्पित था। इस बात का पता इस बात से चलता है कि पेड़ी बाई की बेटे दाई लाडो का वर्णन भी एक हुनगनारों में मिलता है। बाई लाडो न भाई राग राय के नाम यह संदेश आनंदपुर साहब से लिखा गया, जिसके अनुसार दाई लाडो का प्रतिनिधि दरबारी सोभा चंद आनंदपुर साहिब पहुँचा था।

परिवार के प्रति एक सुघड़ पिता, पति व बेटे के नाते आप ने मुंगेर से पटना की संगत को लिखा,

"कोई अक्वल हवेली होवे, बड़ी होवे

तिस में कबीले हमारे रखणा

संगत के गुरु रुजगार में बरकत करेगा सेवा का वेला है।"

ढाका के स्थान पर जब गोबिंद दास जी के जन्म की खबर पहुँची तो. गुरु तेगबहादुर ने पटना की संगत को लिखा,

"सरबत संगत पटने की

जिन सिख वाहेगुरु किया है तिस के मनोरथ पूरे होंवेंगे गोबिंद दास की बढाई ऊपर संगत खर्चा किया गुरु की दरगह थायें पया रूपये की मोहर थायें पई आगे जो सेवा करेगा तिस का भला होवेगा संगत के रुजगार में बरकत होग भाई जी सिरपाऊ भेजिए है पटना गुरु का घर है संगत का भला होग"

बालक गोबिंद का पालन पोषण बड़े प्यार व दुलार से पटना में हो रहा था। अपनी आत्मकथा में आप स्वयं लिखते हैं-

"भांति भांति दाईयन दुलराये कीनी अनिक भांति तन रच्छा

दीनी भांति भांति की सिच्छा"

(विचित्र नाटक, गुरु गोबिंद सिंह) गुरु जी इसका श्रेय भी संगत को देते हैं, उनका धन्यवाद करते हैं और आशीर्वाद भी देते हैं, कि जो सेवा उन्होंने बाल गोबिंद के प्रति की है; वह गुरु जी की दरगाह में कबूल होगी. कुशाग्र, निपुण और सर्व कला संपूर्ण गोबिंद दास के बचपन के खेल कोई साधारण बालक वाले नहीं थे। वह तो समाज में आत्मसम्मान बचपन से ही जगा रहे थे उनके खेल एक नया नरेटिव लिख रहे थे। इतिहास को बदलने की तैयारी दिख रही थी। 'स्व' के लिए गौरव व गरिमा से परिपूर्ण, आपके खेल प्रतिरोध की भूमिका लिख रहे थे। आप बच्चों की दो टोलियाँ बनाकर युद्ध जैसे दृश्य पैदा करते थे। अपने साथियों वह बड़े बुजुर्गों को नवाबों, काजियों व सरकारी ओहदेदारों को सलाम करने से रोकते थे, उनके सामने डटकर खड़े होने का आदेश भी आप देते थे। वास्तव में मैं जुल्म जबर व अन्याय का प्रतिरोध आपकी रग रग में था। कालांतर में वह प्रतिरोध व प्रतिशोध खालसा सृजन के रूप में प्रकट होता है। 1699 ईस्वी में गुरु गोबिंद सिंह ने बैसाखी के दिन एक ऐसा इंसान पैदा किया उसके धर्म रीति-रिवाजों जीवन के उच्च मूल्यों का धारणी होकर उनका रक्षा करने वाला था, जो देश न राष्ट्र के प्रति कुर्बान होने का जन्बा रखता था, जिराने मुगलों के अफगानों की जड़ों को हिला दिया था।

यह बात माताओं का अन्य सेवकों के दिल में चिंता लगाती थी, पर जब गुरु तेगबहादुर जी को यह खबरें पहुँचती थी तो आपने बाल गोबिंद को ऐसे खेलों से रुकने के स्थान पर कहा,

"जो गोबिंद किया भला किया,

अव्वल तो सरकारी अहलकार को सलाम नहीं करना

गर आए ही बैठे तां पवांदी (पाँव की तरफ) देणी, सिरान्दी नहीं। "23

गुरु तेगबहादुर की जी संगठन का काम बड़ी तत्परता के साथ कर रहे थे। गुरु नानक जी द्वारा स्थापित संगतों और सिख सेवकों के मन में नौवें में नानक गुरु तेगबहादुर जी को देखकर अपार हर्ष था।

हुकमनामों से यह पता चलता है कि भाई दयाल दास को पटना का सूबेदार बना दिया गया। पूर्वी प्रांतों में बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश में काशी, मिर्जापुर, जौनपुर, प्रयागराज की संगत को एक नेता देकर गुरुजी ने सिखी को संगठित किया, यह आवश्यक था। पंजाब में गुरु जी फेरियाँ करते रहते थे, पर इन दूरस्थ प्रदेशों में सभी गुरु नहीं पहुँच पाए थे। इसलिए इन प्रदेशों को संभालना व संगठित करना आवश्यक था। मुंगेर से आपने भाई दयाल दास जी को लिखा-

"सरबत सिखां दे मनोरथ गुरु पूरेगा। भाई जी असां मंगेर छावनी किती है। भाई जी तुहाडे पुरे के मसंद है। सरबत संगत पारे की लै के दरसन आवना।"

पटने की संगत को यह आदेश दिया-

"भाई दयाल दास कहे गुरु का हुकम कर मनना।"

"दयालदास कहे सो संगत मनदे रहणा, सिखां का भला होवेगा।" यह हुकुमनामा बनारस की संगत की तरफ है।

ढाका की संगत गुरु जी को आदर सहित लेने के लिए पटना पहुँची थी। उनको फल देते हुए गुरुजी ने उनके साथ चलने की तैयारी कर ली। प्रोफेसर प्यारा सिंह पदम के अनुसार, "बाढ़ कस्बे में तिर्था चौक के पास बालीपुर मोहल्ले में जो गुरुद्वारा बना है, उसमें हस्तलिखित गुरु ग्रंथ साहब की एक बीड़ व पुरातन जन्मसाखी रखी है, जिसमें लिखा है, पैड़े मोखे ने 2 महीने व 17 दिन में इसे तैयार किया था।"

यहाँ से गुरु जी मुंगेर पहुँच गए। महान कोश के अनुसार इस स्थान पर गुरु जी ने पड़ाव किया, उसे पिपल पाती पक्की संगत मुंगेर कहा जाता है।"

भाई संतोख सिंह के अनुसार :

हुतो मुंगेर नगर इक भारे

बसह बिंद त्र गंगा किनारे

श्री सतगुर थ उतरे जाये

संगत सुन आई समुदाय।"

मुंगेर से आपने जो हुकमनामा भाई दयाल सिंह जी को भेजा उसमें रगष्ट रूप से कहा, "हुण समां है सिखी दी सेवा करण दा" डॉक्टर तरलोचन सिंह लिखते हैं, कि एक आसामी इतिहासकार का यह कहना है कि वह बेशुमार ब्राह्मणों व क्षत्रियों के गुरु बन गए और केवल वाहेगुरु वाहेगुरु ही बोलते थे।"

अगला पड़ाव भागलपुर में था जहाँ आज भी कई गाँव सिखों के बाहुल्य के क्षेत्र हैं। उनकी पोशाक बिहारी है, व भाषा भी मैथिली बोलते हैं पर वह केसाधारी हैं और सिख रस्मों रिवाजों को मानते हैं। यह कई तरह

से पंजाब के सिखों से अधिक साफ व पवित्र हैं।" यहाँ से गुरुजी मालदा, गोडाकारी, गोपालपुर, पावना व मुर्शिदाबाद होते हुए ढाका पहुँचे।

ढाका उस समय बंगाल की राजधानी था मलमल व सूती कपड़े के लिए विशेष प्रसिद्ध था वह एक बड़ा व्यापारिक केंद्र था। लोग धनी थे, और लेन-देन मोहरें गिन कर नहीं तोल कर दी जाती थी। गुरु नानक देव जी ने अपनी पहली उदासी के समय 1507 ईस्वी में सिख संगत स्थापित की थी। कालांतर में गुरु अमरदास तीसरे सिख गुरु ने जब 22 मंजियों की स्थापना की, तो यहाँ पर एक मंडी स्थापित की थी। गुरु हरगोबिंदजी के समय उदासी भाई अलमस्त जी को यहाँ प्रचार प्रसार के लिए भेजा गया, जिन्होंने भाई नत्था सिंह जी को यह कार्य सौंपा. गुरु तेगबहादुर जी के समय मसंद भाई बुलाकी दास जी प्रचार व संगठन का कार्य कर रहे थे। बुलाकी दास जी की माता गुरुजी पर बहुत श्रद्धा रखती थी। आपने ढाका के बेहतरीन व उम्दा मलमल से गुरु जी की पोशाक बनवाई व उनके विराजने के लिए एक सिंहासन भी बनवाया था। गुरु जी ने वस्त्रों को अंगीकार किया, व सिंहासन पर भी विराजे. माता जी की यह प्रबल इच्छा थी कि गुरु जी की एक तस्वीर उनके पास हो, जो गुरुजी के पास होने का एहसास लगातार होता रहे।

नवाब भाइस्ता खान भी गुरुजी से काफी प्रभावित था, उसने एक प्रसिद्ध चित्रकार तस्वीर बनाने वाले के लिए भेजा. चित्रकार ने गुरुजी के शरीर के सभी अंग और वस्त्र तो बना लिए; पर वह चेहरा नहीं बना पा रहा था। चेहरे का ओज इतना अधिक था, दैवीय तेज इतना प्रबल था. वह उसका चित्र ना बना पाया। गुरु जी ने स्वयं कलम लेकर चेहरा बना दिया। प्रिंसिपल सतबीर सिंह ठीक लिखते हैं कि शायद यह किसी पैगंबर का पहला स्वयं बनाया चित्र (सेल्फ portrait) होगा। ढाका की संगत का प्यार देखते हुए गुरुजी यहाँ लगभग 1 वर्ष तक रहे और कहा "मम सिखी का कोठा ढाका" स्थान पर भाई मेहरचंद, भाई कल्याण दास गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्म का शुभ समाचार लेकर पहुँचे। बालक का नाम गोबिंद दास रखा गया। बचपन में गोविंद राम राय नाम भी प्रचलित रहा होगा, पर गुरु जी के हुकुम नामों में गोबिंद दास ही मिलता है। भाई दयालदास, राजा फतेह चंद मैनी के उत्साह से गोविंद दास के खेलने व रहने के लिए एक बड़ी हवेली का निर्माण किया गया, जिसमें बाग बगीचे भी बनाए गए। ढाका में भी इस खुशखबरी को उल्लास व खुशी से मनाया गया। रात को दीपमाला की गई तथा कीर्तन का प्रवाह चलता रहा, जरूरतमंदों को कपड़ा दिया व लंगर भी चलते रहे। ढाका से गुरुजी सिलहट संदीप तथा जैतीपुर इत्यादि भी गए। वहाँ सिख संगतें गुरु नानक जी के समय से कायम थीं।

सन्दर्भ सूची :

1. प्रि. सतबीर सिंह, इति जिन करी, पृष्ठ 55
2. भाई संतोख सिंह, गुरु प्रताप सूरज, अंश 28
3. सेवा सिंह, गुरु तेगबहादुर, पृष्ठ 110

- 4.सूरज प्रकाश, रास 39
5. सतबीर सिंह, इति जिन करी, पृष्ठ 63
- 6.MARTYAR, P. 193
- 7.DR. Trilochan Singh, GURU TEG BAHADUR: PROFETAND सिंह, पृष्ठ 205 गुरु तेगबहादुर जीवन,
- 8.सफर व शहादत सम्पादक डॉ तरन प्रि. सेवा सिंह कौड़ा, गुरु तेगबहादुर, पृष्ठ 11
9. प्रि. सतबीर सिंह, इति जिन करो, पृष्ठ 43
10. प्रि. सतबीर सिंह, इति जिन करी, पृष्ठ 71
11. भाई संतोख सिंह, गुरु प्रताप सूरज, अंश 32
12. भाई संतोख सिंह, गुरु प्रताप सूरज, अंश 32
  
13. गुरु कियों साखियाँ, साखी नम्बर 225. पृष्ठ 73
15. महिमा प्रकाश, 29
14. महिमा प्रकाश, साखी 5, महला नौवां
16. प्रि. सतबीर सिंह, इति जिन करी, पृष्ठ, 75
17. भाई संतोख सिंह, गु.प्र.सू. रास 11. अंस 49
18. ज्ञानी ठाकुर सिंह, श्री गुरुद्वारा दर्शन, पृष्ठ 183
- 19.डॉ तरलोचन सिंह, गुरु तेगबहादुर, (पंजाबी) पृष्ठ 41
20. ज्ञानी ठाकुर सिंह, श्री गुरुद्वारे दर्शन, पृष्ठ 184
21. प्रि. सतबीर सिंह, इति जिन करी. पृष्ठ 97-98
22. A jurnay from Bengal to England, language department, Punjab 1970, P-300
23. Gobind Sadan Times, nov 2002
24. प्रि. सतबीर सिंह, इति जिन करी, पृष्ठ 94
25. प्रि. सतबीर सिंह, इति जिन करी, पृष्ठ 96
26. महान कोष, पृष्ठ 983

27. भाई संतोख सिंह, गु.प्र.सू. रास 12. अंसु 4

28. वही, पृष्ठ 20